© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 639-645

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन

स्वाती जायसवाल
शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक शिक्षा संकाय
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय
इलाहाबाद (उ0प्र0)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का शीर्षक निम्नवत् है – **''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन''** है। अध्ययन के उद्देश्य में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत समस्या के आधार पर वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक रूचि में सहसम्बन्ध को जानने के लिए उद्देश्यपरक न्यादर्शन विधि का उपयोग किया गया है। इस चयन के लिए अध्ययनरत् ने माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर कक्षा–12 के 200 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक द्वारा किया गया है। डा0 करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित घरेलू वातावरण अनुसूची एवं प्रस्तुत शैक्षिक रूचि प्रपत्र डा0 काजी गौस आलम एवं डा0 रामजी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए सहसम्बन्ध गुणांक आघूर्ण सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है– माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है। माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है। माध्यमिक स्तर की शहरी छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है। माध्यमिक स्तर की ग्रामीण छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

की–वर्ड– माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, घरेलू वातावरण, शैक्षिक अभिरूचि, सहसम्बन्ध, ग्रामीण एवं शहरी

प्रस्तावना

घरेलू सामाजिक परिस्थिति को घरेलू वातावरण कहते हैं। परन्तु वातावरण से अभिप्राय मानव निर्मित मनो सामाजिक वातावरण से है, जो परिवार के समस्त सदस्यों को अपनी परिधि में ढके हुए होता है। खासतौर पर बालक के विकास के परिप्रेक्ष्य में इसका आशय घर के उस मनो सामाजिक वातावरण से है, जो बच्चों द्वारा प्रत्यक्षीकरण किया जाता है, जिसमें बालक का व्यक्तित्व प्रभावित होता है।

कोई बालक जब परिवार में जन्म लेता है तो तत्काल वह कुछ नहीं कर पाता है। परिवार के सदस्य उसका पालन–पोषण करते हैं, उसकी सेवा–सुश्रुषा करते है, परिवार में उसका विकास होता है, काफी दिनों तक वह असहाय रहता है, अपने माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों पर आश्रित रहता है।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 639-645

बच्चा परिवार से कुछ करने का सीख लेता है। बच्चे की माँ ही बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है। यही बच्चों में सर्व प्रथम भाषा ज्ञान के प्रति लगाव पैदा करती है। इसके साथ–साथ धीरे–धीरे बच्चे में शिक्षा के प्रति लगाव उत्पन्न हो जाता है। यह निर्भर करता है, माँ कितनी जागरूक है, शिक्षा के प्रति माँ जागरूक है तो अपने बच्चें में बचपन से ही बच्चे में विद्यालय जाने के लिए प्रेरणा देगी और प्रारम्भ में स्वतः विद्यालय के प्रति लगाव बच्चें में बचपन से उत्पन्न होगा। बच्चे में माता–पिता व परिवार के प्रति प्रेम की प्रगाड़ता बढ़ेगी।

पारिवारिक वातावरण में माता–पिता अपने बच्चे को पर्याप्त समय देते हैं इसके साथ–साथ परिवार के अन्य सदस्य भी बच्चों को प्रेम प्रदान करते है जो अनेक शैक्षिक अभिरूचि के साथ–साथ व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है। स्नेह, प्रेम, सौहार्द के अलावा बालक की अन्य आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखना और उसकी समय–समय पर पूर्ति करना अनिवार्य है क्योंकि उसके समुचित विकास के लिए परिवार में भावनात्मक वातावरण का निर्माण एवं सुरक्षा दोनों आवश्यक है। जिस परिवार के बच्चे को घर में समय–समय पर स्नेह मिलता रहता है उस घर के बालक का भावात्मक विकास भी अपेक्षाकृत अधिक अच्छा होता है और ऐसे घर के बालक अधिक भावात्मक सुरक्षा का अनुभव करते है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक अनुसंधानों से सिद्ध हुआ है कि परिवार व घर का वातावरण भी बालक के शिक्षा–दीक्षा को प्रभावित करता है। परिवार के सदस्य बालक को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करते रहते है। मध्यम वर्ग के लोग बालक–बालिकाओं की शिक्षा के लिए सबसे अधिक त्याग करते है। अनुसंधानों से पता चलता है कि घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक यह सम्बन्ध है। घरेलू वातावरण में अध्ययन सम्बन्धों प्रेरणा से बालक के ज्ञान में वृद्धि होती है। उसका मानसिक विकास होता है।

सीखने–सिखाने की सप्रयोजन युक्त सतत् प्रक्रिया ही शिक्षा कहलाती है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियाँ का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपनी समस्याओं का समाधान करता है, जीवन को आनन्दमय बनाता है तथा जनकल्याण के कार्यों में प्रवृत्त होता है।

शिक्षा का उद्देश्य है ज्ञान में वृद्धि के द्वारा व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना जिसके जिसके फलस्वरूप बालक को जीवन में सफलता मिलती है। शिक्षा की प्रक्रिया के अन्तर्गत सभी स्तरों पर शिक्षा उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है। और इन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न शिक्षण प्रक्रियाओं का आयोजन किया जाता है। इन्हीं शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति ही शैक्षिक अभिरूचि कहलाती है। इस शैक्षिक अभिरूचि को अनेक कारक प्रभावित करते है जिसके कारण भिन्न–भिन्न बालकों की शैक्षिक अभिरूचियाँ भिन्न–भिन्न होती है। किन कारणों से शैक्षिक अभिरूचि कम होती है। यदि यह तथ्य ज्ञात हो जाये तो अभिरूचि के निषेधात्मक कारणों को घटाया जा सकता है। शैक्षिक अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारकों में घरेलू वातावरण एक महत्त्वपूर्ण कारक है। घरेलू वातावरण का शैक्षिक अभिरूचि पर प्रभाव का ज्ञान हो जाने पर घरेलू वातावरण को अधिक अनुकूल कर बालक की शैक्षिक रूचि को बढ़ाया जा सकता है। और शिक्षण उद्देश्यों को उच्च सीमा तक प्राप्त किया जा सकता है इससे स्पष्ट है कि शैक्षिक अभिरूचि पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। अतः इस अध्ययन को आवश्यकता निर्विवाद रूप से है।

पूर्व के शोध अध्ययन के अवलोकन से ज्ञात होता है कि *अग्रवाल (1986), मेनन, जी0एस0 (1992), पाण्डेय, एस0के0 (1992), विलर, एण्ड सौलमन (1993), अग्रवाल और कपूर (1998), चंग के0 डी0*

(2001), एस0 रानी एवं अन्य (2005), अरङन तथा अन्य (2007), बाजपेयी, दीप्ति (2009), आनन्द, सरोज (2010), त्रिपाठी, कुमुद (2011), निगम, प्रतिभा (2011), श्रीवास्तव, मंयक कुमार (2011) ने पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों पर सृजनात्मकता, शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, शैक्षिक रूचियों एवं विद्यालयी अभिवृत्तियों, उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, सामाजिक दबाव और विद्यालयी उपलब्धि का अध्ययन, विभिन्न सामाजिक, आर्थिक तथा बौद्धिक स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचि तथा विद्यालयी अभिवृत्ति का अध्ययन, निष्पत्ति पर प्रभाव, उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव, शैक्षिक क्रिया कलाप में अभिभावकों की सहभागिता, शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता के प्रभाव का अध्ययन, विद्यार्थियों की विद्यालयी निष्पत्ति, वातावरण तथा व्यक्तित्व पर प्रभाव, शैक्षिक उपलब्धि और योग्यता, मातृ–पितृ प्रोत्साहन और आत्मबोध का अध्ययन, पिता की अनुपस्थित और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव इत्यादि का अध्ययन किया है एवं अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि घरेलू वातावरण विद्यार्थियों से जुड़े चरों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

जहाँ तक छात्रों की शैक्षिक अभिरूचि पर घरेलू वातावरण के पड़ने वाले प्रभावों का सम्बन्ध है, पर अनेक अध्ययन हुये है। पर सभी शोध अध्ययनों की गम्भीरतापूर्वक अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि बहुत कम शोधकर्ता ने अभी तक घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन बहुत कम हुआ है एवं घरेलू वातावरण का शैक्षिक अभिरूचि पर क्या, कैसे व कितना प्रभाव पड़ता है, व प्रत्येक का शैक्षिक अभिरूचि के मध्य कोई सहसम्बन्ध है अथवा नहीं, का अध्ययन नहीं किया गया है। घरेलू वातावरण का उसके प्रत्येक आयामों का शैक्षिक अभिरूचि पर क्या प्रभाव पड़ता है, या प्रत्येक का शैक्षिक अभिरूचि से कैसे सहसम्बन्धित है, यह शोधकर्त्री के जिज्ञासा का विषय हो गया है। इस जिज्ञासा की संतुष्टि हेतु अपने अध्ययन में प्रस्तुत समस्या का चयन किया।

शोध का शीर्षक

प्रस्तुत अध्ययन का शीर्षक निम्नवत् है–

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन।"

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी कार्य को करने का एक निश्चित उद्देश्य होता है। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

अध्ययन को निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गयी है–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध है।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 639-645

2. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध है।
3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों कें घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध है।
4. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध है।

शोध विधि

प्रस्तुत समस्या के आधार पर वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक रूचि में सहसम्बन्ध को जानने के लिए उद्देश्यपरक न्यादर्शन विधि का उपयोग किया गया है। इस चयन के लिए अध्ययनरत् ने माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर कक्षा–12 के 200 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक द्वारा किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण–

डा0 करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित घरेलू वातावरण अनुसूची एवं प्रस्तुत शैक्षिक रूचि प्रपत्र डा0 काजी गौस आलम एवं डा0 रामजी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि–

आँकड़ों के विश्लेषण के लिए सहसम्बन्ध गुणांक आघूर्ण सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी सं0 1

माध्यमिक स्तर के छात्रों के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

समूह	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)
छात्र	50	0.325

व्याख्या–

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गई जिससे r का मान 0.325 प्राप्त हुआ जो कि 48 स्वतन्त्रांश (df) के लिए .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 0.273 से अधिक है अर्थात् अन्तर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध होता है अर्थात् कहा जा सकता है कि शैक्षिक अभिरूचि पर घरेलू वातावरण एक–दूसरे से सम्बन्धित है।

2. माध्यमिक स्तर की शहरी छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी सं0 2

माध्यमिक स्तर की शहरी छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

समूह	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)
छात्र	50	0.358

व्याख्या–

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर की छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गई जिससे r का मान 0.358 प्राप्त हुआ जो कि 48 स्वतन्त्रांश (df) के लिए .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 0.273 से अधिक है अर्थात् अन्तर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर की शहरी छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध होता है अर्थात् कहा जा सकता है कि शैक्षिक अभिरूचि पर घरेलू वातावरण एक–दूसरे से सम्बन्धित है।

3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी सं0 3

माध्यमिक स्तर के छात्रों के ग्रामीण छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

समूह	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)
छात्र	50	0.279

व्याख्या–

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गई जिससे r का मान 0.279 प्राप्त हुआ जो कि 48 स्वतन्त्रांश (df) के लिए .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 0.273 से अधिक है अर्थात् अन्तर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध होता है अर्थात् कहा जा सकता है कि शैक्षिक अभिरूचि पर घरेलू वातावरण एक–दूसरे से सम्बन्धित है।

4. माध्यमिक स्तर की ग्रामीण छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी सं0 4

माध्यमिक स्तर की ग्रामीण छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

समूह	N	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)
छात्र	50	0.286

व्याख्या–

तालिका संख्या 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर की ग्रामीण छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गई जिससे r का मान 0.286 प्राप्त हुआ जो कि 48 स्वतन्त्रांश (df) के लिए .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 0.273 से अधिक है अर्थात् अन्तर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर की ग्रामीण छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध होता है अर्थात् कहा जा सकता है कि शैक्षिक अभिरूचि पर घरेलू वातावरण एक–दूसरे से सम्बन्धित है।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है–

- माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर की शहरी छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर की ग्रामीण छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

निहितार्थ–

छात्र–छात्राओं के घरेलू वातावरण में निम्नलिखित निहितार्थ दिये जा सकते हैं जिससे उनके रूचियों में वृद्धि की जा सकें–

1. बच्चों को उचित पालन–पोषण, देखभाल, आवश्यक विशेष सुविधाओं को उपलब्ध करके, उन्हें विचार अभिव्यक्ति, मौलिक गुणों के प्रदर्शन का स्वतन्त्र अवसर देकर उनकी आवश्यकताओं भावनाओं एवं लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए उनको उचित दिशा में मार्गदर्शन करके मित्रवत् भावात्मक लगाव रखकर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से बढ़ाया जा सकता है।
2. घर में शान्ति, सहयोग, प्रसन्नता, लोकतांत्रिकता, स्वतंत्रता, भागीदारी आदि को महत्त्व देकर घर के वातावरण को अनुकूल बनाया जा सकता है।
3. वस्तुतः घरेलू वातावरण के निर्माण के लिए घर के वरिष्ठ सदस्य ही सर्वाधिक जिम्मेदार होते है। यदि वे घर के छोटे सदस्यों से प्यार से पेश आये, छोटों की भावनाओं को ध्यान में रखें, निर्णय लेने के पहले घर की महिलाओं तथा छोटे सदस्यों की भी राय लें तथा उनकी बातों पर गौर करें, तो घर का वातावरण सुखद और आनन्दमय हो जाय। उनके कार्यों तथा विचारों का प्रभाव छोटे सदस्यों पर भी पड़ेगा जिससे उनमें भी अच्छे विचार, संस्कार रूप में सुस्थापित हो जायेंगे और घर का वातावरण अनुकूल हो जाएगा जिससे समाज का वातावरण भी अनुकूल होगा और मानव समाज विकास के मार्ग पर तेजी से अग्रसर हो सकेगा।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 7, March-April-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 639-645

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, के0 एल0 (1986). विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पितृ–प्रोत्साहन के प्रभावों का एक अध्ययन, पी0–एच0 डी0 शिक्षाशास्त्र, गढ़वाल यूनिवर्सिटी।
- अरोरा, रीता (1988). उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के लड़के–लडकियों की शैक्षिक उपलब्धि में अभिभावकों बच्चों का सम्बन्ध और शिक्षक–शिक्षार्थी के सम्बन्ध की भूमिका, पी0–एच0 *डी0 साइकालॉजी*, आगरा यूनिवर्सिटी।
- अग्रवाल, रेखा एवं कपूर, माला (1998). प्राइमरी स्तर पर बच्चों के शैक्षिक क्रिया कलाप में अभिभावक की सहभागिता उनकी शैक्षिक स्थिति के बीच सम्बन्ध, *जर्नल ऑफ इण्डियन एजूकेशन*, वाल्यूम–4।
- अरडन तथा अन्य (2007). छात्रों की शैक्षिक निष्पति एवं परिवार द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, यूरोप : *जनरल साइकोलॉजी ऑफ एजूकेशन*।
- कुमुद, त्रिपाठी (2011). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावः एक अध्ययन, *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका*, लखनऊ।
- गुप्ता, एस.पी. एण्ड गुप्ता ए. (2007). सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबादः शारदा प्रकाशन।
- चौरसिया, लक्ष्मी (2014). स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, इलाहाबादः नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।
- जोशी, आर0आर0 (1983), मनोवैज्ञानिक चरों के संदर्भ में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की रूचियों का अध्ययन, पी0एच–डी0 शोध प्रबन्ध, सरदार पटेल वि0वि0।
- दिवाकर, श्वेता (2014). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, इलाहाबादः नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।
- दीप्ती, बाजपेयी (2009). विभिन्न सामाजिक, आर्थिक तथा बौद्धिक स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचि तथा विद्यालयी अभिवृत्ति, का अध्ययन, एम0 फिल0 एजूकेशन, कानपुर : सी0एस0जे0एम0 यूनिवर्सिटी कानपुर।
- दीक्षित, कुसुम (1997). अंतर्मुखी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व वाले छात्र–छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचियों का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, कानपुरः कानपुर विश्वविद्यालय।
- पाण्डेय, एस0के0 (1992). पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता तथा बच्चों की आपसी सम्बन्धों के प्रभाव का अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, फैजाबादः अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
- मिश्रा, एस0 (1998). माध्यमिक स्तर के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, कानपुरः कानपुर विश्वविद्यालय।
- मिश्रा, रंजना (1993). उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं की शैक्षिक रूचियों का अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, इलाहाबादः इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
- साराह ई0 अलथाफ, क्रिस्टेन जे0 लिण्डे जॉन मासन, (2007). हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स एकेडमिक एचीवमेन्ट स्टूडेण्ट मोटीवेशन, क्लासरूम कम्न्यूकेशन, *डिजरटेशन थीसिस ऑन लाइन समर्थन*।
- श्रीवास्तव, मयंक कुमार (2011). ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, *भारतीय शोध–पत्रिका*, वाल्यूम –29(1). जनवरी–जून 2011।